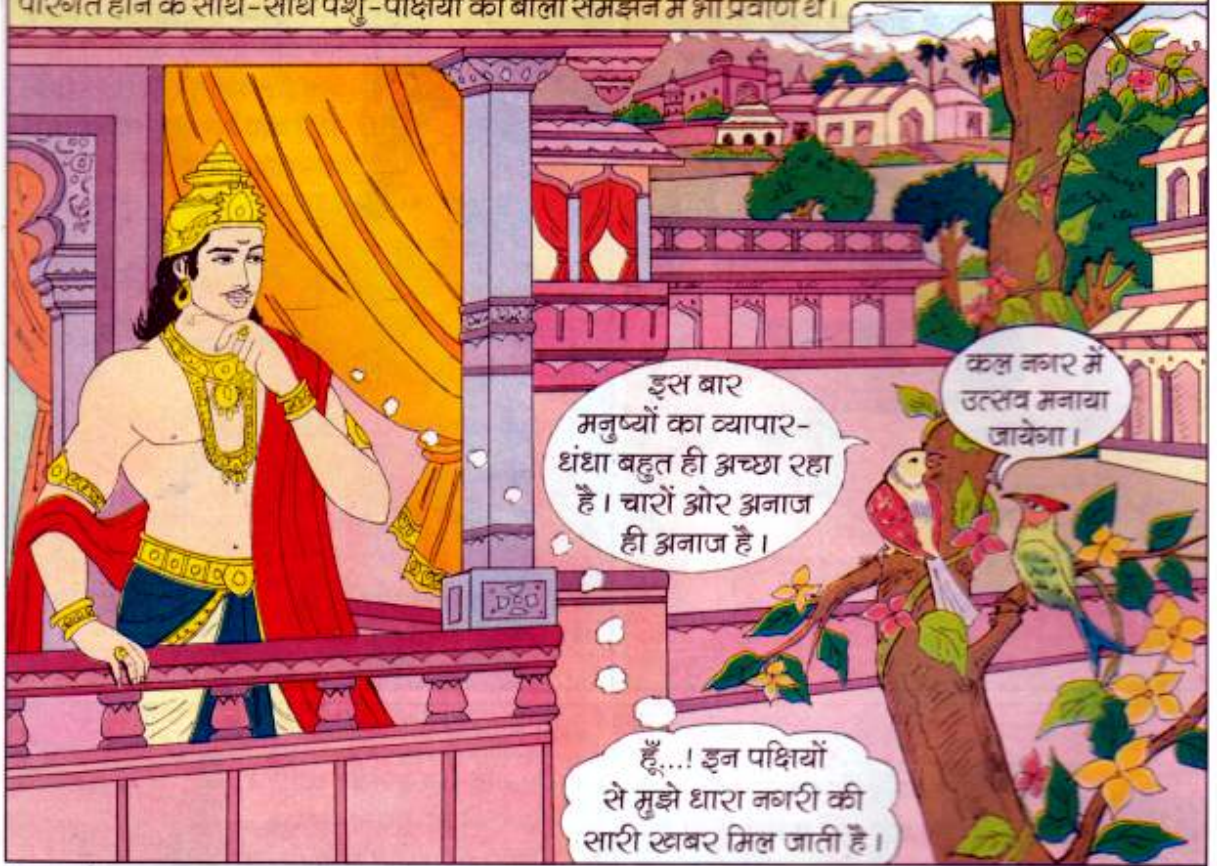


## बोली तो ऐसे बोली

लगभग 2500 वर्ष पहले की बात है। धारा नगरी में राजा भोज का शासन था। राजा भोज न्यायप्रिय और प्रजा पालक राजा थे। वह अनेक प्रकार की विद्याओं में पारंगत होने के साथ-साथ पशु-पक्षियों की बोली समझने में भी प्रवीण थे।



इस बार मनुष्यों का व्यापार-धंधा बहुत ही अच्छा रहा है। चारों ओर अनाज ही अनाज है।

कल नगर में उत्सव मनाया जायेगा।

हूँ...! इन पक्षियों से मुझे धारा नगरी की सारी खबर मिल जाती है।

एक दिन राजा भोजन कर रहे थे। पास में बैठी रानी आनुमति उनको भोजन परोस रही थी। इतने में ही धाली से गिरा हुआ चावल का एक दाना लेकर एक चींटी भागी। उधर से दूसरी चींटी ने उसके मुँह से वह दाना छीनना चाहा। उसे टोककर पहली चींटी बोली—

अरी भोली ! राजा भोज की नगरी में कोई लूटपाट नहीं करता। तब तू मेरा चावल का दाना क्यों छीन रही है ?

अरे बहन ! क्या हुआ अगर मैंने तुम्हारा लाया दाना खा लिया तो...?



उन दोनों का संवाद सुनकर राजा के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गई।



राजा को अचानक हँसते देख रानी ने कारण जानना चाहा—

महाराज ! क्या बात है ? आपको किस बात पर हँसी आ रही है ?

नहीं ! कुछ भी नहीं महारानी ! ऐसे ही हँसी आ गई ।



परन्तु रानी अपनी जिद पर अड़ी रही । बार-बार पूछने पर भी जब राजा ने हँसकर टाल दिया तो उसने भी अपना त्रियाहट दिखालाया—

ठीक है महाराज ! अगर आप नहीं बताना चाहते हैं तो न बताइये परन्तु जब तक आप नहीं बतायेंगे तब तक मैं भी अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगी ।



यह सुनकर राजा दुविधा में फँस गया । वह सोचने लगा—

यदि मैं रानी को हँसी का भेद नहीं बताता हूँ तो यह अपनी जिद पर अड़ी रहेगी । अगर बता दिया तो मृत्यु का भय है ।



राजा ने रानी को समझाते हुए कहा—

प्रिये ! यदि तुम इसका कारण पूछती हो तो अपना सुहाग लुटा ही समझ लेना ।

महाराज ! अब आपको नहीं बताना है तो बहाना बना रहे हैं ?



# पशु-पक्षियों की बोली समझने वाली विद्या की विशेषता थी कि भेद खुलने पर विद्या जानने वाले की मृत्यु हो जाती थी ।



## बोली तो ऐसे बोली

बार-बार समझाने पर भी रानी किसी बात को सुनने को तैयार नहीं थी और अपनी जिद पर अड़ी रही। तब राजा ने भोज ने सोचा—

मौत निश्चित है तो यहाँ क्यों मरूँ ? गंगा के तट पर जाकर शांति से प्राण त्यागूँगा।



यही सोचकर राजा ने रानी से कहा—

महारानी ! हम आपको इस बात का भेद गंगा के तट पर बतायेंगे। आप परिवार सहित गंगा तट पर चलिंए।

ठीक है महाराज ! मैं आपके साथ गंगा तट पर चलूँगी लेकिन आपकी हँसी का रहस्य समझकर ही रहूँगी।

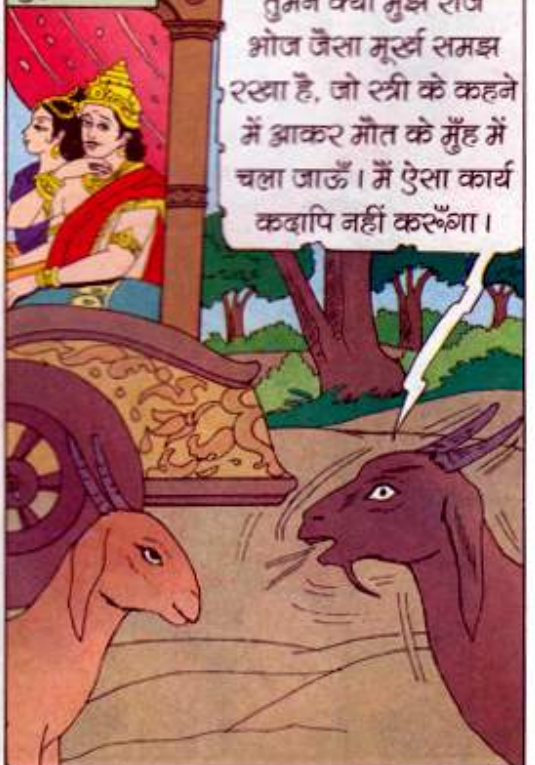


अगले दिन राजा भोज रानी को लेकर गंगा तट की ओर चल दिये। मार्ग में उन्हें एक बकरा-बकरी दिखाई दिये। बकरी बकरे से कुएँ में लटकती काचर की बेल की ओर संकेत करके कह रही थी—



प्रियवर ! मुझे वह काचर की बेल ला बीजिए। मेरी उसे खाने की ईच्छा हो रही है।

यह सुनकर बकरे ने इनकार में गर्दन हिलाते हुए कहा—



तुमने क्या मुझे राज भोज जैसा मूर्ख समझ रखा है, जो स्त्री के कहने में आकर मौत के मुँह में चला जाऊँ। मैं ऐसा कार्य कदापि नहीं करूँगा।